

भगत रविदास – सबद ४०
मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते ॥
रागु मलार, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, १२९३

मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते ॥
साधसंगति पाई परम गते ॥ रहाउ ॥
मैले कपरे कहा लउ धोवउ ॥
आवैगी नीद कहा लगु सोवउ ॥ १ ॥
जोई जोई जोरिओ सोई सोई फाटिओ ॥
झूठै बनजि उठि ही गई हाटिओ ॥ २ ॥
कहु रविदास भइओ जब लेखो ॥
जोई जोई कीनो सोई सोई देखिओ ॥ ३ ॥ १ ॥ ३ ॥

सार: आत्मनिरीक्षण तब शुरू होता है जब हम अपने कर्मों पर ध्यान देते हैं, बिना उन्हें सही ठहराने या उनकी बुराई करने की आवश्यकता से मुक्त होकर। अपने व्यवहार को मापने या उसका बचाव करने के बजाय, हम अपने इरादों, प्रवृत्तियों, भय, आदतों और संस्कारों की जाँच करते हैं। यह दृष्टि हमें बिना किसी रुकावट के सोचने और यह समझने में मदद करती है कि हमारे कर्म अंदरूनी और बाहरी दोनों तरह के अनुभवों को प्रतिबिंबित करते हैं जो हमारे चरित्र को परिभाषित नहीं करते हैं। जबकि जवाबदेही ज़रूरी है, आत्म-संदेह को कम करने से ज़्यादा स्पष्टता आती है। अपने अनुभवों को स्वीकार करने से विवेकपूर्ण जवाब मिलते हैं। यह दिखाता है कि आत्मनिरीक्षण चेतना और विकास को बढ़ावा दे सकता है जिसके लिए हम सभी प्रयास करते हैं।

मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते ॥

उस सर्वव्यापक, जीवनदायी सत्ता से जुड़ने के लिए किस तरह की भक्ति अपेक्षित है? यह ऐसी मानसिक अवस्था की खोज है जिसके द्वारा चेतना प्रकाशित होती है।

साधसंगति पाई परम गते ॥ रहाउ ॥

नेकी की संगत के माध्यम से, ज्ञान की सबसे ऊँची अवस्था प्राप्ति की जा सकती है। यह दर्शाता है कि आंतरिक चिंतन और अनुभव की सीख भ्रम की उलझन को बोध में रूपांतरित कर सकती है।
(विराम)

मैले कपरे कहा लउ धोवउ ॥

मैं कब तक मैले कपड़ों को धोता रहूँगा? यह अहंकार को बाहरी और सतही उपायों से शुद्ध करने के प्रयास की थकान और ख़ालीपन को दर्शाता है।

आवैगी नीद कहा लगु सोवउ ॥ १॥

जब नींद आएगी, तब मैं कब तक इस नींद में सोता रहूँगा? यह संकेत करता है कि अज्ञान की अवस्थाएँ स्वाभाविक हैं लेकिन क्या हमें इस अवस्था को मान लेना चाहिए और विकास के अवसर को गँवा देना चाहिए। (१)

जोई जोई जोरिओ सोई सोई फाटिओ ॥

जो कुछ भी मैंने जोड़ा, वही अंततः टूट गया। यह चीज़ों से बंधे रहने की निरर्थकता को दर्शाता है और यह बताता है कि सब कुछ क्षणभंगुर है और अंततः बिछुड़ता ही है।

झूठे बनजि उठि ही गई हाटिओ ॥ २॥

धोखे वाले व्यापार में शामिल होने से दुकान ही बंद हो गई। इससे पता चलता है कि द्वैत में किया गया निवेश आंतरिक स्थिरता को नष्ट कर देता है और जीवन के अवसर हाथ से निकल जाते हैं। (२)

कहु रविदास भइओ जब लेखो ॥

रविदास कहते हैं कि जब अंतरात्मा हिसाब-किताब करती है। यह अपने कर्मों के प्रति आत्मनिरीक्षण के उस क्षण की ओर संकेत करता है जहाँ गणना नहीं बल्कि साक्षी भाव से पहचान होती है।

जोई जोई कीनो सोई सोई देखिओ ॥ ३ ॥ १ ॥ ३ ॥

हम जो भी काम करते हैं, उसका वैसा ही नतीजा देखते हैं। कारण और प्रभाव का यह नियम, ऐसी वास्तविकता है जिसे हम स्वयं रचते हैं, इसे पश्चात्ताप के लिए नहीं बल्कि विकास के लिए देखा जाना चाहिए। (३)(१)(३)

तत्त्व: भक्त रविदास कारण और परिणाम-प्रभाव के सिद्धांत पर ज़ोर देते हैं। हमारे निरंतर विचार, कर्म और निर्णय हमारे अनुभवों को आकार देते हैं और ऐसे नतीजे देते हैं जो हमारे व्यवहार को प्रतिबिंबित करते हैं। वह मानते हैं कि अज्ञानता के पल टाले नहीं जा सकते, हम या तो उन्हें स्वीकार कर सकते हैं और आगे बढ़ने से चूक सकते हैं या उन्हें पहचान सकते हैं और चेतना की खोज कर सकते हैं। हर अनुभव मूल्यवान प्रतिक्रिया देता है जो पछतावे का कारण नहीं बल्कि परिवर्तन का उत्प्रेरक बन सकता है। इस दृष्टि को अपनाने से बदलाव आ सकता है और हम अपने कर्मों और जीवन में प्रामाणिकता बनाए रख सकते हैं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com